युवा जीवन

जुलाई 2026

पश्चाताएँ - पलटें - और - पाएं - परमेश्वर का

अनुग्रह!

प्रस्तावना

मेरे प्रिय युवा साथियों, यीशु मसीह के अनमोल नाम में आप सभी को अभिवादन!

युवा स्त्री और पुरुषों के रूप में, आप परमेश्वर के राज्य के लिए महान कार्य करने हेतु चुने गए 'अंतिम समय के पुनर्जागृति के योद्धा' हैं। इतिहास में परमेश्वर ने जिन भी महान लोगों का इस्तेमाल किया, वे अपनी दौड़ को विजयी रूप से इसलिए पूरा कर पाए क्योंकि विश्वास की अपनी पूरी यात्रा के दौरान उन्होंने अपनी नज़रें यीशु पर टिकाए रखीं।

आज भी, बहुत से लोग बिना हार माने परमेश्वर के लिए दौड़ रहे हैं, भले ही उनमें थोड़ी ही ताकत हो और कभी-कभी वे रास्ते में लड़खड़ा भी जाते हों। उनके दौड़ते रहने का कारण वह अनुग्रह है जो परमेश्वर ने उन पर दिखाया है। हालाँकि, कुछ लोग अपनी दौड़ में पीछे रह गए हैं, और कुछ ने दौड़ना पूरी तरह छोड़ दिया है। इसका कारण इस संसार का आकर्षण और प्रलोभन है।

परमेश्वर ने जो लोग गिर गए हैं उनके प्रति अनुशासन दिखाया है, लेकिन आप पर उन्होंने कृपा दिखाई है। इसलिए, यदि आप उस कृपा में बने रहते हैं, तो परमेश्वर का अनुग्रह आपके जीवन पर बना रहेगा।

शिमशोन

वह असाधारण ताकत वाला व्यक्ति था। फिर भी, अपनी इच्छाओं पर काबू न रख पाने के कारण, वह उस दर्शन को भूल गया जो परमेश्वर ने उसे दिया था, उसने अपना अभिषेक खो दिया, और अंततः दूसरों के लिए तमाशा बन गया।

सुलेमान

वह अपनी बुद्धिमत्ता के लिए प्रसिद्ध था। फिर भी, परमेश्वर को भूलकर, वह विदेशी देवताओं के पीछे हो लिया और उसने अपना मन प्रभु से हटा लिया।

दाऊद

"हित्ती ऊरिय्याह के मामले को छोड़कर, दाऊद ने वही किया जो प्रभु की दृष्टि में सही था और अपने जीवन के सभी दिनों में प्रभु की किसी भी आज्ञा का पालन करने में कभी असफल नहीं हुआ" (1 राजा 15:5)।

दाऊद ने अपने जीवन के अंत तक उस कृपा को बनाए रखा जो परमेश्वर ने उस पर दिखाई थी। इसका मुख्य कारण उसका सच्चा पश्चाताप था। हालाँकि दाऊद एक बार लड़खड़ाया था, लेकिन उसने पश्चाताप किया, फिर से उठा, और परमेश्वर की अनुग्रह में बना रहा।

आपको भी पाप के प्रति मरने और धार्मिकता के लिए जीने के लिए बुलाया गया है। इसलिए, पीछे न मुड़ें। यीशु की ओर दौड़ते रहें! दाऊद की तरह, परमेश्वर के अनुग्रह में दृढ़ बने रहें, और आप अपनी दौड़ को अंत तक विजयी रूप से पूरा करें!

"उसकी कृपा में जड़े रहें, अपनी नज़रें यीशु पर टिकाए रखें, और अपनी दौड़ मज़बूती से पूरी करें।"

मसीह मिशन में
मोहन सी. लाजरस

वो आवाज़ जिसने अंधकार को हराया!

सभी युवा विजेताओं को हार्दिक बधाई!

ज़िंदगी हर किसी को एक जैसा रास्ता नहीं देती। कुछ लोगों को मौके आसानी से मिल जाते हैं; तो कुछ को कामयाबी पाने के लिए कड़ी मेहनत और संघर्ष करना पड़ता है। लेकिन मुश्किलें कितनी भी बड़ी क्यों न हों, अगर स्वयं पर भरोसा उनसे भी बड़ा हो, तो जीत पक्की हो जाती है। आज, आइए एक ऐसी युवा लड़की के प्रेरणादायक सफ़र पर नज़र डालें जो यही साबित करती है।

उत्तर प्रदेश की सारा मोइन का जन्म चुनौतियों से भरी ज़िंदगी में हुआ था। बहुत कम उम्र से ही उन्हें सुनने में दिक्कत, बोलने में परेशानी और देखने में कमज़ोरी जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ा। स्कूल की ज़िंदगी उनके लिए कभी आसान नहीं रही। सबक समझना, क्लासमेट्स के साथ सीखना और परीक्षा की तैयारी करना—ये सब उनके लिए रोज़ाना की लड़ाइयाँ थीं।

लेकिन इन संघर्षों ने उन्हें तोड़ा नहीं—बल्कि उन्हें और मज़बूत बनाया। परिवार का प्रेम और शिक्षकों का हौसला उनका सबसे बड़ा सहारा बना। बस एक ही भरोसे के साथ—"एक दिन मैं ज़रूर कामयाब होऊँगी"—उन्होंने अपनी पढ़ाई के लिए दोगुनी मेहनत शुरू कर दी।

जहाँ दूसरे लोग काम आसानी से कर लेते थे, वहीं उन्हें हर छोटी कामयाबी के लिए भी बहुत ज़्यादा मेहनत करनी पड़ती थी। फिर भी, उन्होंने कभी हार नहीं मानी। कदम-दर-कदम, वे अटूट संकल्प के साथ अपने सपने की ओर बढ़ती रहीं।

और फिर वो शानदार पल आया—ISC क्लास 12 बोर्ड परीक्षा, 2026 में 98.7% अंक! यह सिर्फ़ एक स्कोर नहीं है। यह उनके आँसुओं, त्याग, संघर्ष, सब्र और अटूट इच्छाशक्ति की आवाज़ है। जब दुनिया ने सिर्फ़ उनकी कमज़ोरियों को देखा, तो उन्होंने दुनिया को अपनी ताकत देखने पर मजबूर कर दिया।

शारीरिक कमज़ोरियाँ हो सकती हैं। हालात आपके खिलाफ़ हो सकते हैं। मौकों में देरी हो सकती है। लेकिन अगर आपके अंदर भरोसा है, तो कोई भी ऊँचाई पाना नामुमकिन नहीं है। सारा ने अपनी ज़िंदगी से यह साबित किया है।

मित्रों, सारा के सफ़र से सबसे बड़ी सीख यही है: जीवन में चाहे कुछ भी खो जाए, कभी उम्मीद न छोड़ें। बहुत से लोग छोटी-सी नाकामी से ही हार मान लेते हैं। लेकिन कुछ लोग अपनी मुश्किलों को सीढ़ी बनाकर कामयाबी की ऊँचाइयों तक पहुँचते हैं। सारा उन्हीं में से एक हैं।

क्या आप आज थका हुआ महसूस कर रहे हैं? नाकामी से निराश हैं? तो तुरंत उठ खड़े हों। अंधेरा चाहे कितना भी लंबा क्यों न हो, रोशनी ज़रूर आएगी। आप तभी चमक सकते हैं जब आप उठेंगे... ठीक सारा की तरह!

यह आपका पल है। हार मान लेना या आगे बढ़ना—चुनाव आपका है..!

पश्चाताप करो... तुम फिर से बनाए जाओगे!

अय्यूब 22:23 "यदि तुम सर्वशक्तिमान की ओर फिरोगे, तो तुम फिर से बनाए जाओगे; यदि तुम अपने डेरे से अधर्म को दूर कर दोगे।"

हो सकता है कि आज आपका जीवन, परिवार, करियर या कार्यस्थल बिखरा हुआ या टूटा हुआ महसूस हो रहा हो। सब कुछ अस्त-व्यस्त लग सकता है, मानो आशीषें पूरी तरह से दूर हो गई हों। आप शायद उलझन में खड़े होकर सोच रहे हों:

"क्या मैं फिर से उठ सकता हूँ?"

"क्या मेरा जीवन कभी फिर से संवर सकता है?"

लेकिन आज आपके लिए प्रभु का वचन यह है:

"यदि तुम पश्चाताप करोगे, तो तुम फिर से संवारे और बनाए जाओगे!"

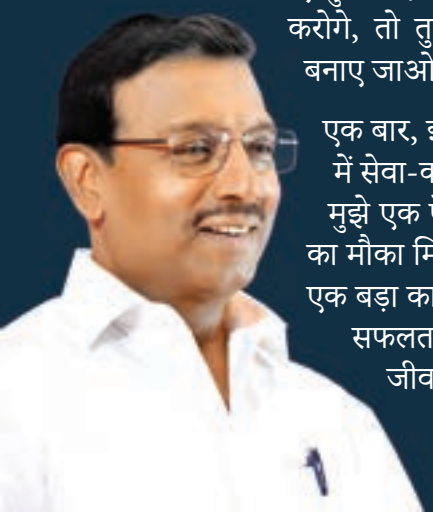

एक बार, इंडोनेशिया के एक शहर में सेवा-कार्य की यात्रा के दौरान, मुझे एक ऐसे व्यवसायी से मिलने का मौका मिला, जिनका कपड़ों का एक बड़ा कारोबार था। उन्होंने धन, सफलता और सम्मान से भरा जीवन जिया था। लेकिन अचानक, सब कुछ उलट-पुलट हो गया।

उनके व्यवसाय को भारी नुकसान हुआ। जिस कारोबार को उन्होंने वर्षों तक खड़ा किया था, वह ढह गया। उसी समय, उन्हें एक गंभीर बीमारी ने जकड़ लिया। आमदनी बंद हो गई। स्वास्थ्य बिगड़ गया। भविष्य की उम्मीदें पूरी तरह टूट गईं।

ऐसी स्थिति में, उनकी पत्नी ने भी उन्हें छोड़ने का फैसला किया और कहा कि वह अब यह रिश्ता नहीं निभा सकतीं। कुछ ही महीनों में, उन्होंने सब कुछ खो दिया—व्यवसाय, स्वास्थ्य और परिवार—और बिल्कुल अकेले रह गए। गहरी निराशा में, उन्होंने अपनी जान देने का भी फैसला कर लिया।

उस टूटे हुए पल में, कोई उनके पास आया और कहा, "यदि तुम यीशु की ओर मुड़ोगे, तो वह तुम्हारे जीवन को फिर से संवार देंगे।" उन शब्दों ने उनके हृदय को गहराई से छू लिया। उन्होंने विश्वास किया और यीशु मसीह की ओर मुड़े।

उसके बाद, उनके जीवन में एक चमत्कारिक बदलाव शुरू हुआ। सबसे पहले, परमेश्वर की शांति ने उनके परेशान और निराश हृदय को भर दिया। फिर प्रभु ने उन्हें छुआ और उनके शारीरिक स्वास्थ्य को बहाल किया। कदम-दर-कदम, परमेश्वर ने उन्हें एक बिल्कुल नई शुरुआत दी। यहाँ तक कि उनका परिवार भी फिर से जुड़ गया क्योंकि प्रभु ने उनकी पत्नी का हृदय बदल दिया, और वे फिर से एक हो गए। आज, परमेश्वर की कृपा से, वे खुशी और बहाली का जीवन जी रहे हैं।

हर झूठी चीज़ से मुड़कर सच्चे और जीवित परमेश्वर के पास लौट आओ।

अपनी पापपूर्ण जीवनशैली को छोड़ दें और पवित्र परमेश्वर के पास लौट आएं।

अपने गलत रास्ते से मुड़ें और पूरे दिल से यीशु की ओर मुड़ें।

प्रिय मित्रों, हो सकता है कि आज आपका जीवन भी नुकसान, विफलता, दर्द और टूटे हुए सपनों से भरा हो। ऐसा लग सकता है कि सब कुछ खत्म हो गया है। लेकिन यीशु आज भी आपको बुला रहे हैं:

"पश्चाताप करो... मैं तुम्हें फिर से बनाऊंगा!"

यदि आपके जीवन में कुछ ऐसा है जिसके लिए पश्चाताप की आवश्यकता है, तो आज ही यीशु की ओर लौटें। प्रभु टूटी हुई चीज़ों को फिर से बनाने और बिखरी हुई चीज़ों को वापस सुंदर रूप देने में समर्थ हैं।

हर पांचवें रविवार को हमारे पास युवाओं के लिए एक विशेष कार्यक्रम होता है - "रिवाइवल इग्नाइटर फ़ेलोशिप"। यह जीसस रिडीम्स मिनिस्ट्रीज के यूट्यूब चैनल पर 30/08/2026 और 29/11/2026 को दोपहर 3:00 बजे "लाइव" प्रसारित किया जाएगा।कृपया अधिक जानकारी के लिए नीचे दिए गए नंबर पर हमसे संपर्क करें।

Revival IGNITERS

संपर्क संख्या : +919750955548

YouTube Jesus Redeems - Hindi

Comforter DIGITAL CHANNEL www.comfortertv.com

परमेश्वर का अनुग्रह और उनका अनुशासन!!

आज की मसीही दुनिया में, हम अक्सर परमेश्वर के केवल एक पहलू पर ध्यान देते हैं—उनका प्रेम और दया। हम उन्हें एक प्रेम करने वाले, दयालु पिता के रूप में देखना पसंद करते हैं। हाँ, परमेश्वर का प्रेम बिल्कुल सच है—लेकिन उनका अनुशासन और न्याय भी उतना ही सच है।

जो लोग इसके लायक नहीं हैं, उनके प्रति परमेश्वर के बिना योग्यता वाले प्रेम को ही हम उनका अनुग्रह कहते हैं। लेकिन परमेश्वर के प्रेम करने वाले होने का मतलब यह नहीं है कि वे पाप को बर्दाश्त करते हैं। परमेश्वर ज्योति हैं, और उनमें ज़रा भी अंधकार नहीं है (1 यूहन्ना 1:5)। जैसे अंधकार ज्योति के सामने नहीं टिक सकता, वैसे ही पाप पवित्रता की उपस्थिति में नहीं टिक सकता। जब उनके अनुग्रह का गलत इस्तेमाल होता है और लोग पाप में जीते रहते हैं, तब उनका अनुशासन सामने आता है।

जब दाऊद को उसके अपने परिवार ने ठुकरा दिया और भुला दिया, तो यह परमेश्वर का अनुग्रह ही था जिसने उसे भेड़ें चराने वाले से राजा के सिंहासन पर बिठाया। प्रभु के अनुग्रह से, जब कई लोग उसके खिलाफ हो गए, तब भी परमेश्वर ने हर स्थिति में उसकी रक्षा की और उसे बचाया। हालाँकि परमेश्वर ने उसके बारे में गवाही दी थी, "मुझे यिशै का बेटा दाऊद मिला है, जो मेरे मन के अनुसार है; वह वो सब करेगा जो मैं चाहता हूँ" (प्रेरितों के काम 13:22), फिर भी जब दाऊद ने पाप किया, तो परमेश्वर ने उसे चुपचाप नज़रअंदाज़ नहीं किया। उन्होंने नबी नातान को उससे बात करने के लिए भेजा। "इसलिए, अब तुम्हारे घर से तलवार कभी नहीं हटेगी, क्योंकि तुमने मुझे तुच्छ समझा और हित्ती उरिय्याह की पत्नी को अपनी पत्नी बना लिया..."

(2 शमूएल 12:10)। परमेश्वर के अनुशासन के कारण, दाऊद का घर कभी भी झगड़ों से मुक्त नहीं रहा, और यहाँ तक कि उसके अपने बेटे भी उसके खिलाफ हो गए, जिससे उसके जीवन में गहरा दुख आया।

आज, कई युवा आध्यात्मिक रूप से दूर हो जाते हैं क्योंकि वे परमेश्वर के केवल एक पहलू को जानते हैं। बचपन से ही उन्हें केवल परमेश्वर के प्रेम के बारे में सिखाया जाता है, और धीरे-धीरे एक लापरवाह सोच विकसित हो जाती है—"मैं कुछ भी करूँ, परमेश्वर मुझे माफ़ कर ही देंगे।" लेकिन जब हम सच में समझते हैं कि परमेश्वर न केवल दयालु हैं बल्कि एक धर्मी न्यायकर्ता भी हैं, तो हम पवित्रता में चलना सीखेंगे। परमेश्वर पाप को नज़रअंदाज़ करते हुए आपकी भक्ति को अनदेखा नहीं करते। चाहे आप स्वयं को उनके कितना भी करीब क्यों न समझें, छिपी हुई आदतें, गलत रिश्ते और गुप्त पाप फिर भी उनके सुधार का कारण बनेंगे। याद रखें, वे लोगों के बीच भेदभाव नहीं करते। जब दाऊद का पाप सबके सामने आया, तो वह बहुत दुखी हुआ और उसने नाथन से कहा, "मैंने प्रभु के विरुद्ध पाप किया है" (2 शमूएल 12:13)। आम तौर पर, जब लोगों को उनकी गलतियों के बारे में बताया जाता है, तो वे बहाने बनाकर अपना बचाव करने की कोशिश करते हैं। लेकिन दाऊद, जो एक राजा था, उसने न तो अपना पाप छिपाया और न ही स्वयं को सही ठहराने की कोशिश की। उसने बस अपना पाप मान लिया। इसी वजह से उसे दया मिली—"प्रभु ने तुम्हारा पाप दूर कर दिया है; तुम मरोगे नहीं" (2 शमूएल 12:13)। हो सकता है कि आप लोगों से अपने पाप छिपा लें, लेकिन परमेश्वर से कुछ भी छिपाया नहीं जा सकता। "जो अपने पाप छिपाता है, वह सफल नहीं होता, लेकिन जो उन्हें मान लेता है और छोड़ देता है, उसे दया मिलती है" (नीतिवचन 28:13)।

प्रिय युवा मित्रों! अगर आप सोचते हैं, "यीशु मुझसे प्रेम करते हैं, मैं उनकी सेवा कर रहा हूँ, इसलिए अगर मैं चुपके से कोई पाप कर भी लूँ, तो कोई फर्क नहीं पड़ता," तो आप स्वयं को धोखा दे रहे हैं। आपका पाप चाहे कितना भी बड़ा क्यों न हो, अपना मन कठोर न करें। दाऊद की तरह, अगर आप नम्रता से अपना पाप मान लें और पछतावे के साथ वापस लौट आएं, तो आप परमेश्वर के अनुग्रह में बने रहेंगे। लेकिन अगर ऐसा नहीं करते, तो आपको उनके अनुशासन का सामना करना पड़ेगा।

Revival IGNITERS

इग्नाइटर्स यूथ फ़ेलोशिप एक जगह है जहां युवा अपनी आध्यात्मिकता को प्रज्वलित करते हैं जीवन की गहन सच्चाइयों की खोज करें बाइबल, और प्रार्थना करने में शक्ति पाएँ एक समूह के रूप में देश।आपका स्वागत है इस फ़ेलोशिप में शामिल होने और बढ़ने के लिए मज़बूत। चलो भी! अपने आप को मजबूत करो,और दुसरों को मजबूत करने के लिए तैयार हो जाइये !

हर पहले रविवार
Mumbai – Dharavi
Timing: 5.00 PM- 7.30 PM
World Revival Prayer Centre
2nd Floor, Above Balakrishna
Farsan Mart, Opp. Apna Restaurant,
Near Kamarajar School,
90 Feet Road,
9004882470

हर दूसरे रविवार
THANE
Timing: 5PM - 7:30PM
R.P. Mangala High School
(Near Railway Station),
Room No.10,
Opp. Bank of Maharashtra,
Thane (East)
9004882470

हर चौथे रविवार
Mumbai-Malad
Timing: 4.00 PM – 6.00 PM
Bethel Ground Floor
305/E, Mith Chauky,
Marve Road,
Malad (W)
9664050567 | 9619996976

दबाव में आकार लेना

हेलो मित्रों, आप सब कैसे हैं? इस महीने के लेख के ज़रिए आपसे फिर से मिलकर मुझे बहुत खुशी हो रही है।

सबसे पहले, विश्व युवा दिवस की शुभकामनाएँ!

परमेश्वर ने हममें से हर एक को अनोखे हुनर और काबिलियत दी है। हममें से कई लोग उन वरदानों को पहचानते हैं और उनका सक्रिय रूप से इस्तेमाल करते हैं, जबकि दूसरे लोग यह सोचकर कि उनमें कोई खास हुनर नहीं है, स्वयं को अयोग्य महसूस करते हैं। लेकिन परमेश्वर चाहते हैं कि हममें से हर कोई उन वरदानों को पहचाने जो उन्होंने हमारे अंदर रखे हैं और उनकी महिमा के लिए उनका इस्तेमाल करे।

अब, आइए एक दिलचस्प और बहुत सम्मानित कला—पत्थर की नक्काशी—पर नज़र डालते हैं।

क्या आपने कभी पत्थर की मूर्ति की तारीफ़ की है? कई जगहों पर आपको नेताओं, जानवरों, पक्षियों और दूसरी खास आकृतियों की पत्थर से बनी मूर्तियाँ मिलेंगी।

लेकिन क्या आपने कभी सोचा है कि एक खुरदरा पत्थर कैसे एक बेहतरीन कलाकृति बन जाता है?

1. पत्थर चुनना

यह प्रक्रिया सही पत्थर चुनने से शुरू होती है। पत्थर मज़बूत होना चाहिए और उसमें कोई दरार या कमी नहीं होनी चाहिए।

ग्रेनाइट और दूसरे मज़बूत पत्थरों को अक्सर चुना जाता है क्योंकि वे समय की कसौटी पर खरे उतरते हैं।

2. मूर्ति का डिज़ाइन बनाना

नक्काशी शुरू होने से पहले, मूर्तिकार कागज़ पर अलग-अलग कोणों—सामने, किनारे और ऊपर के दृश्यों—से डिज़ाइन का स्केच बनाता है। फिर, पत्थर पर मुख्य रूपरेखाएँ बनाई जाती हैं, जिनसे पता चलता है कि सिर, हाथ, पैर और दूसरी विशेषताएँ कहाँ बनाई जाएँगी।

3. पहली काट – अतिरिक्त हिस्से को हटाना

इस चरण को अक्सर "नॉकिंग आउट" (अतिरिक्त हिस्से को हटाना) कहा जाता है।

हथौड़े और छेनी का इस्तेमाल करके, मूर्तिकार पत्थर के अनावश्यक हिस्सों को हटाता है। मज़बूत और ज़ोरदार प्रहारों से अनावश्यक हिस्सा हट जाता है, और धीरे-धीरे अंदर छिपा हुआ मूल आकार सामने आने लगता है।

4. आकार देना

फिर मूर्ति को और ज़्यादा सही आकार देने के लिए अलग-अलग तरह की छेनी का इस्तेमाल किया जाता है। जैसे-जैसे मूर्तिकार सावधानी से संरचना को निखारता है, हाथ, पैर, चेहरा और शरीर आकार लेने लगते हैं।

5. बारीक विवरण

यहीं पर असली सुंदरता उभरकर आती है।

आँख, नाक, मुँह, कान और यहाँ तक कि कपड़ों की सिलवटों जैसी बारीक चीज़ों को उकेरने के लिए छोटी छेनी का इस्तेमाल किया जाता है। हर बारीक स्पर्श मूर्ति में जान और विशेषता भर देता है।

5. बारीक विवरण

यहीं पर असली सुंदरता उभरकर आती है।

आँख, नाक, मुँह, कान और यहाँ तक कि कपड़ों की सिलवटों जैसी बारीक चीज़ों को उकेरने के लिए छोटी छेनी का इस्तेमाल किया जाता है।

हर बारीक स्पर्श मूर्ति में जान और विशेषता भर देता है।

मित्रों, क्या आपने गौर किया कि एक खूबसूरत मूर्ति बनने से पहले पत्थर को कितना दबाव और दर्द सहना पड़ता है?

सबसे पहला कदम उन चीज़ों को हटाना है जिनकी ज़रूरत नहीं है। हथौड़े की ज़ोरदार चोटें पड़ती हैं। छेनी से गहरे कट लगते हैं। फिर भी, उन दर्दनाक चोटों का मकसद पत्थर को नष्ट करना नहीं होता—बल्कि उसे उस बेहतरीन कलाकृति में बदलना होता है जिसकी कल्पना मूर्तिकार ने की थी।

जिस तरह एक मूर्तिकार सावधानी से ऐसा पत्थर चुनता है जो इस प्रक्रिया को सह सके, उसी तरह परमेश्वर ने हमें भी एक मकसद के साथ चुना है। वह जानते हैं कि मुश्किल हालात, दर्द भरे दौर और भारी दबाव के बावजूद हम डटे रह सकते हैं, मुश्किलों से उबर सकते हैं और आखिरकार वैसे इंसान बन सकते हैं जैसा वह हमें बनाना चाहते हैं।

हर चुनौती हमारे चरित्र को आकार दे रही है। हर आज़माइश हमारे विश्वास को निखार रही है। दबाव का हर पल हमें परमेश्वर के किसी बड़े मकसद के लिए तैयार कर रहा है।

इसलिए याद रखें:

दबाव का मकसद आपको तोड़ना नहीं—बल्कि आपको बेहतर बनाना है।

अगले महीने फिर मिलेंगे!

परमेश्वर के लोगों के लिए एक नई शुरुआत — एज्रा, नहेमायाह और एस्तेर

ये किताबें 538–430 ईसा पूर्व के समय को बतातीं हैं, जब फारसी साम्राज्य का शासन था और यहूदी बेबीलोन से निर्वासित होकर लौटे थे। हालाँकि यरूशलेम नष्ट हो गया था और परमेश्वर के लोग बिखर गए थे, फिर भी प्रभु अपने वायदे के प्रति वफादार रहे और उन्होंने अद्भुत तरीकों से उन्हें फिर से बसाया।

एज्रा — आराधना की बहाली

एज्रा की किताब राजा साइरस के आदेश पर बेबीलोन से यरूशलेम लौटने वाले यहूदी निर्वासितों पर केंद्रित है। पहले जरुब्बाबेल और बाद में याजक और लेखक एज्रा के नेतृत्व में, लोगों ने मंदिर का पुनर्निर्माण किया और परमेश्वर के नियम के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को नवीनीकृत किया।

मुख्य विषय:

- **सच्ची आराधना की बहाली।**
- **परमेश्वर के वचन का पालन।**
- **आध्यात्मिक नवीनीकरण।**
- **मुश्किल हालात में परमेश्वर की वफादारी।**
- **एज्रा इस बात पर जोर देते हैं कि शहर को फिर से बनाने से कहीं अधिक महत्वपूर्ण परमेश्वर के लोगों की आध्यात्मिक स्थिति को फिर से बनाना है।**

नहेमायाह — शहरपनाह का पुनर्निर्माण

यरूशलेम की टूटी हुई शहरपनाह को फिर से बनाने की अनुमति मिलने से पहले, नहेमायाह फारसी राजा के लिए पिलानेहारा के रूप में सेवा करते थे। दुश्मनों के विरोध, निराशा और लगातार धमकियों के बावजूद, उन्होंने प्रार्थना, बुद्धिमत्ता और अटूट संकल्प के साथ लोगों का नेतृत्व किया।

मुख्य विषय:

- **नेतृत्व और दृढ़ता।**
- **प्रार्थना और परमेश्वर पर निर्भरता।**
- **परमेश्वर के लोगों के बीच एकता।**
- **साझा दृष्टिकोण के साथ पुनर्निर्माण।**
- **यह किताब दिखाती है कि कैसे परमेश्वर असाधारण काम करने के लिए इच्छुक मन वाले साधारण लोगों का उपयोग करते हैं।**

एस्तेर — विदेशी धरती पर परमेश्वर के लोगों के लिए जुनून

एज्रा और नहेमायाह के विपरीत, एस्तेर की कहानी यरूशलेम के बजाय फारस में सामने आती है। एक अनाथ यहूदी लड़की जो रानी बनी, एस्तेर ने राजा अहासवेरस (ज़ेरक्सीस प्रथम) के शासनकाल के दौरान अपने लोगों को विनाश से बचाने के लिए साहसपूर्वक अपनी जान जोखिम में डाली।

इस किताब की एक दिलचस्प विशेषता यह है कि इसमें परमेश्वर का नाम कभी स्पष्ट रूप से नहीं लिया गया है, फिर भी हर घटना में उनका अलौकिक मार्गदर्शन देखा जा सकता है।

मुख्य विषय:

- परमेश्वर की अनदेखी देखभाल (providence)।
- साहस और विश्वास।
- परमेश्वर का सही समय।
- अपने लोगों की मुक्ति।
- एस्तेर विश्वासियों को याद दिलाती है कि जब परमेश्वर चुप लगते हैं, तब भी वे पर्दे के पीछे काम कर रहे होते हैं।

इसे याद रखें

एज्रा, नहेमायाह और एस्तेर मिलकर दिखाते हैं कि परमेश्वर का सामर्थ्य कैसे काम करता है:

- एज्रा ने मंदिर को फिर से बनाया।
- नहेमायाह ने शहर की दीवारों को फिर से बनाया।
- एस्तेर ने लोगों की रक्षा करने में मदद की।

हालात चाहे कितने भी बिगड़े हुए या अस्त-व्यस्त क्यों न दिखें, ये किताबें बहुत खूबसूरती से दिखाती हैं कि परमेश्वर अपने महान मकसद के लिए उपासना को बहाल करने, जिंदगियों को फिर से संवारने और अपने लोगों की रक्षा करने में समर्थ हैं।

जब परमेश्वर हस्तक्षेप करते हैं, तो खंडहर फिर से बन जाते हैं, डर विश्वास में बदल जाता है, और बिखरे हुए लोग उनकी वफादारी का सबूत बन जाते हैं।

विश्व जागृति प्रार्थना भवन

Our Branches

Mumbai (Dharavi)
World Revival Prayer Canter, T/1, Block No.11,
90 Feet Road, Rajiv Gandhi Nagar Dharavi, Mumbai - 400 017
Email: br.dharavi@jesusredeems.org, Ph: +91 8082410410

Mumbai (Malad)
World Revival Prayer Center, Bethel, Plot 305/E,
Mith Chowky Marve Road, Malad(w) Mumbai - 400064
Ph: +91 9664050567

Ranchi
World Revival Prayer Centre, Kadru Sarna Toli,
Near Argora Railway Station, Road no -1, Doranda P.O
Ranchi - 834 002, Jharkand,
Email: br.ranchi@jesusredeems.org, Ph: 9523336010

Chandigarh
World Revival Prayer Centre, SCO-19 1st Floor,
Ranjan Plaza Market, Opp. to motia Homes,
Zirakpur, Mohali Dt., Punjab- 140603
Email: br.chandigarh@jesusredeems.org, Ph:9417726492

Delhi
World Revival Prayer Centre, Plot no 152, Ground floor,
Pratap nagar,opposite harinagar bus depot, New Delhi - 110064
Email: br.delhi@jesusredeems.org, Ph: 011-25616253 / 35580428

Come and Pray

डर और चिंता से छुटकारा (डिटॉक्स)

हेलो मित्रों! मुझे उम्मीद है कि पिछले महीने का डिटॉक्स लेख आपके लिए सच में मददगार रहा होगा। इस महीने, क्या हम यह सीखें कि डर और चिंता से स्वयं को कैसे डिटॉक्स करें?

डर और चिंता मन और आत्मा दोनों पर गहरा असर डालते हैं। जब हम खतरे का सामना करते हैं तो डर एक स्वाभाविक प्रतिक्रिया होती है। लेकिन जब इसके साथ चिंता बढ़ती जाती है, तो यह हमारे मन की शांति, खुशी, नींद और आत्मविश्वास छीन लेती है। परमेश्वर कभी नहीं चाहते कि हम डर के साये में जिएं। अनिश्चित स्थितियों में भी, वे हमें अपनी अलौकिक शांति का अनुभव करने के लिए बुलाते हैं।

ज़्यादातर समय, डर भविष्य, स्वास्थ्य, आर्थिक स्थिरता, रिश्तों या व्यक्तिगत असफलताओं की चिंताओं से पैदा होता है। कभी-कभार चिंता होना सामान्य है, लेकिन लगातार बना रहने वाला डर हमारे शारीरिक स्वास्थ्य और आध्यात्मिक जीवन दोनों पर असर डाल सकता है। डर पर काबू पाने का पहला कदम उसे पहचानना है।

लचीलापन बढ़ाना

लचीलापन चुनौतियों के बावजूद फिर से उठने और आगे बढ़ने की क्षमता है। यह प्रार्थना, परमेश्वर के वचन पर मनन, सहायक रिश्तों, कृतज्ञता और स्वस्थ आदतों के माध्यम से बढ़ता है। हर चुनौती विश्वास और चरित्र में मज़बूत होने का अवसर बन सकती है।

प्रार्थना और व्यावहारिक कदम

पौलुस विश्वासियों को प्रोत्साहित करते हैं कि वे हर चिंता को प्रार्थना में परमेश्वर के सामने लाएं। प्रार्थना हमें उन बोझों को छोड़ने में मदद करती है जिन्हें हम नियंत्रित नहीं कर सकते। प्रार्थना के साथ-साथ, निम्नलिखित व्यावहारिक कदम भी मदद कर सकते हैं:

अपनी चिंताओं को किसी भरोसेमंद व्यक्ति के साथ साझा करें।

अच्छी नींद, व्यायाम और संतुलित आहार जैसी स्वस्थ आदतें अपनाएं।

तनावपूर्ण या नकारात्मक जानकारी के संपर्क में आने को सीमित करें।

हर संभावित परिणाम के बारे में चिंता करने के बजाय, एक बार में एक दिन पर ध्यान केंद्रित करना सीखें।

अनिश्चित समय में परमेश्वर पर भरोसा

जीवन अनिश्चितताओं से भरा है, लेकिन परमेश्वर वफादार बने रहते हैं। जब हम उनके वादों को याद करते हैं और उनकी अच्छाई पर विचार करते हैं, और जब हम अपने डर को उन्हें सौंप देते हैं, तो हमारा विश्वास और आत्मविश्वास मज़बूत होता है।

विश्वास अनिश्चितता की अनुपस्थिति नहीं है; यह वह भरोसा है कि भले ही हम सब कुछ न समझें, परमेश्वर हमारे साथ हैं और हमारी भलाई के लिए काम कर रहे हैं।

टिप्स (सुझाव)

आज, अपनी सबसे बड़ी चिंता लिखें। विशेष रूप से इसके बारे में प्रार्थना करें और इसे परमेश्वर को सौंप दें। साथ ही, बाइबिल का एक वायदा लिखें जो आपको परमेश्वर के प्रेम और वफादारी की याद दिलाए।

प्रार्थना

हे प्रभु, मैं अपने सभी डर और चिंताएं आपके सामने लाता/लाती हूं। मेरे हृदय को अपनी शांति से भर दें। हर स्थिति में आप पर भरोसा करने में मेरी मदद करें और मुझे हर दिन विश्वास और हिम्मत के साथ सामना करने के लिए मज़बूत बनाएं। आमीन।

प्रार्थना के विषय 2026 जुलाई

डिजिटल लत से छुटकारा

लाखों युवा, विशेषकर 18-29 साल की उम्र के लोग, नेटफ्लिक्स, अमेज़न प्राइम विडियो, डिज़्नी हॉटस्टार और यू-ट्यूब जैसे स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म पर घंटों बिताते हैं। लगातार और बहुत ज़्यादा देर तक वीडियो देखने (बिंज-वॉचिंग) से अक्सर समय के प्रबंधन, मानसिक शांति, रिश्तों और शारीरिक सेहत पर बुरा असर पड़ता है। आइए प्रार्थना करें कि युवा मीडिया की बुरी लत से आज़ाद हों और अपने समय का सही इस्तेमाल करें।

के-पॉप(K-Pop) और के-ड्रामा(K-Drama) के जुनून से छुटकारा

कई किशोर हर दिन घंटों के-पॉप(K-Pop) और के-ड्रामा(K-Drama) कल्चर में डूबे रहते हैं। कुछ मामलों में, इससे परिवार में झगड़े, मानसिक परेशानी, अपनी पहचान को लेकर उलझन और मशहूर हस्तियों (सेलिब्रिटी) की जीवनशैली और दिखावे की नकल करने की बुरी कोशिशें जैसी समस्याएं पैदा हुई हैं। आइए प्रार्थना करें कि युवा मसीह में अपनी पहचान पाएं और हर तरह के बुरे जुनून से आज़ाद हों।

नौकरी खोने वालों के लिए

जैसे-जैसे कंपनियां AI टेक्नोलॉजी और कामकाज के तरीके में बदलाव(Restructuring) को अपना रही हैं, दुनिया भर में हज़ारों कर्मचारियों को नौकरी जाने और अनिश्चितता का सामना करना पड़ रहा है। आइए प्रार्थना करें कि जिन लोगों की नौकरी चली गई है, वे हिम्मत न हारें, और परमेश्वर उनके लिए नए मौके खोलें, उनकी ज़रूरतों को पूरा करें और मुश्किल समय में उन्हें शांति दें।

कैंसर से जूझ रहे बच्चे

हर साल दुनिया भर में लाखों बच्चे और किशोर कैंसर से प्रभावित होते हैं। आइए ल्यूकेमिया, लिम्फोमा, न्यूरोब्लास्टोमा, बोन कैंसर, थायरॉयड कैंसर और दूसरी बीमारियों से पीड़ित बच्चों के लिए प्रार्थना करें। परमेश्वर उन्हें चंगाई, ताकत, सही इलाज और उनके परिवारों को दिलासा दें।

मानव तस्करी के खिलाफ विश्व दिवस (30 जुलाई)

बच्चे और युवा, खासकर लड़कियां, मानव तस्करी के सबसे आसान शिकार होते हैं। कई लोगों का ज़बरदस्ती काम करवाने, आपराधिक गतिविधियों और ऑनलाइन यौन शोषण के ज़रिए शोषण किया जाता है। आइए उनके बचाव, सुरक्षा, पुनर्वास और तस्करी के हर नेटवर्क का पर्दाफाश होने के लिए प्रार्थना करें।

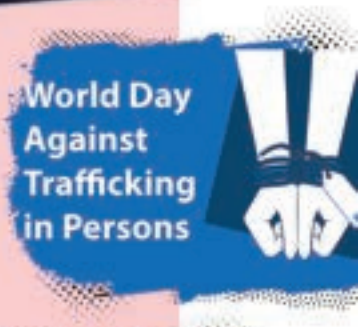

बच्चों की सुरक्षा

आइए कन्या भ्रूण हत्या और बच्चों के खिलाफ हर तरह की हिंसा को खत्म करने के लिए प्रार्थना करें। जो लोग ऐसी हरकतें करते हैं वे पछतावा करें, कानून सख्ती से लागू हों और जागरूकता बढ़े। सड़कों पर रहने वाले बच्चों को स्वास्थ्य सेवा, सुरक्षा और मदद मिले, इसके लिए भी प्रार्थना करें। यीशु मसीह के नाम से युवा जिंदगियों को बर्बाद करने वाली हर योजना नाकाम हो जाए।

बच्चों की सेहत और जीवन-रक्षा

दुनिया भर में बहुत से बच्चे सही इलाज न मिलने, टीके न लगने, कुपोषण और ऐसी बीमारियों की वजह से परेशान हैं जिनसे बचा जा सकता है। आइए हम बच्चों की मौत की दर कम होने, इलाज की बेहतर सुविधाएँ मिलने, अच्छा पोषण मिलने और बच्चों की देखभाल करने वाले हेल्थकेयर प्रोफेशनल्स को सही समझ मिलने के लिए प्रार्थना करें।

रूस और यूक्रेन के बीच शांति

रूस और यूक्रेन के बीच चल रहे झगड़े से अनगिनत परिवार, अर्थव्यवस्थाएँ और समुदाय प्रभावित हो रहे हैं। आइए हम युद्ध खत्म होने, शांति कायम होने और प्रभावित इलाकों में हालात सुधरने, मेल-मिलाप और स्थिरता आने के लिए प्रार्थना करें।

ज़रूरतमंद बच्चों के लिए शिक्षा

गरीबी और अकाल की वजह से अक्सर बच्चे सही शिक्षा नहीं पा पाते। आइए हम प्रार्थना करें कि सरकारें, संस्थाएँ और समुदाय ज़रूरतमंद बच्चों को शिक्षा के मौके, असरदार मदद और बेहतर भविष्य देने के लिए सक्षम बनें।

आखिरी दिनों में आध्यात्मिक जागृति

जैसे-जैसे आखिरी दिनों के संकेत दिखाई दे रहे हैं, आइए हम चर्चों, बच्चों और युवाओं के बीच परमेश्वर की सच्ची उपस्थिति और काम के लिए प्रार्थना करें। बिना किसी समझौते के आध्यात्मिक जागृति फैले और प्रभु के आने के लिए लोगों के दिल तैयार हों।

"धर्मी व्यक्ति की प्रार्थना सामर्थी और असरदार होती है।" — याकूब 5:16

मिशनरी जीवनी – जॉन विंसन

जॉन विंसन का जन्म 28 दिसंबर 1880 को विन्सबोरो में एक सच्चे मसीही परिवार में हुआ था। उनके पिता चर्च के एल्डर(प्राचीन) थे और मिशन संडे स्कूल भी चलाते थे। बचपन से ही जॉन को प्रार्थना, बाइबिल पढ़ने और सक्रिय सेवा-कार्य के माहौल में पाला-पोसा गया।

पास के कॉलेज में पढ़ाई के दौरान, उन्होंने छात्रों को चीन और अफ्रीका जैसे देशों में मिशनरी के तौर पर अपना जीवन समर्पित करते देखा, जिससे वे बहुत प्रभावित हुए। इस अनुभव ने उनके हृदय में परमेश्वर की सेवा करने की गहरी इच्छा जगा दी।

कॉलेज में आने के बाद, वे "आइए दुनिया में सुसमाचार फैलाएं" (Let Us Evangelize the World) नाम के छात्र आंदोलन का हिस्सा बने और अपना जीवन पूरी तरह से परमेश्वर के मिशन को समर्पित कर दिया। हालाँकि शुरू में उन्होंने अफ्रीका जाने की तैयारी की थी, लेकिन परमेश्वर की इच्छा के अनुसार उन्हें बाद में चीन भेजा गया। 4 फरवरी 1907 को वे चीन के उत्तरी कियांगसू इलाके में स्थित सुत्सीन में एक मिशनरी के तौर पर पहुँचे। उन्होंने बड़े उत्साह के साथ वहाँ की स्थानीय भाषा, संस्कृति और जीवनशैली सीखी और कई मुश्किलों के बावजूद अपना सेवा-कार्य शुरू किया।

उन्होंने मिस जीनी डीफॉरेस्ट जंकिन से शादी की, जो एक नेक दिल अमेरिकी मिशनरी थीं। उन्होंने एक बार कहा था, "अगर दुनिया के सभी लोग बच्चों की तरह होते, तो यह दुनिया स्वर्ग जैसी बन जाती।" उनके छह बच्चे हुए, जिनमें से केवल तीन ही बड़े हो पाए। वे साथ मिलकर गाँव-गाँव घूमते, चर्च बनाते और सुसमाचार का प्रचार करते थे।

हालाँकि, उनका जीवन आसान नहीं था। जॉन और जीनी दोनों को गंभीर स्वास्थ्य समस्याओं का सामना करना पड़ा। 1923 में, एक बेटी को जन्म देने के बाद जीनी का निधन हो गया। पत्नी और बच्चों को खोने के बावजूद, जॉन विंसन ने परमेश्वर को दोष नहीं दिया। इसके बजाय, वे अपने विश्वास पर अडिग रहे।

कमज़ोरी और अकेलेपन से घिरे होने के बावजूद, चीन में उनका सेवा-कार्य कभी नहीं रुका। उन्होंने गाँवों में सुसमाचार का प्रचार करने के लिए पैदल, नाव, घोड़े और गाड़ी से यात्रा की। उन्होंने छोटे टेंटों, मिट्टी के घरों और पेड़ों के नीचे 'अच्छी खबर' (सुसमाचार) लोगों तक पहुँचाई।

उनकी सोच सरल लेकिन प्रभावशाली थी:
"अगर एक व्यक्ति मसीह के पास आता है, तो एक परिवार बदल जाता है; अगर एक परिवार बदलता है, तो पूरा गाँव बदल जाता है।"

यहाँ तक कि जब राजनीतिक उथल-पुथल ने उनके घर और सामान को नष्ट कर दिया, तब भी उन्होंने कहा, "मेरा सामान भले ही जल गया हो, लेकिन मेरा बुलावा (परमेश्वर की सेवा का संकल्प) नहीं जला है।" उन्होंने एक बार फिर स्वयं को पूरी तरह से धर्म-सेवा में लगा दिया।

1931 में, जब वे चीन के यांगजियाजी गाँव के एक मसीही चर्च में रुके हुए थे, तब लगभग 600 डाकुओं के एक समूह ने उस इलाके पर हमला किया और जॉन विंसन समेत कई लोगों को बंधक बना लिया। जब सरकारी सेना ने उन्हें छुड़ाने की कोशिश की, तो उन्होंने कहा, "पहले चीनी कैदियों को रिहा करो।"

डाकुओं के सरदार ने उनके सिर पर बंदूक तान दी और पूछा, "क्या तुम्हें डर नहीं लग रहा?"

उन्होंने शांति से जवाब दिया, "नहीं, मुझे डर नहीं लग रहा।"

सरदार ने फिर पूछा, "अभी भी, जब मैं तुम्हें मारने ही वाला हूँ, तब भी तुम्हें डर नहीं लग रहा?" यह कोई काल्पनिक सवाल नहीं था, बल्कि एक सच्ची घटना थी जो 2 नवंबर 1931 को उत्तरी किआंगसु, चीन में हुई थी।

अटूट शांति के साथ, जॉन विंसन ने जवाब दिया, "नहीं, मुझे डर नहीं लग रहा। अगर तुम मुझे मार दोगे, तो मैं सीधे अपने परमेश्वर के पास चला जाऊँगा।"

उन शब्दों ने उनके अटूट विश्वास और अनंत आशा को ज़ाहिर किया। बाद में उनकी गवाही कई देशों के लिए प्रेरणा बन गई। इसके बाद जॉन विंसन को गोली मार दी गई और बाद में उनका सिर काट दिया गया।

प्रिय युवा पाठकों, जॉन विंसन की मौत उनके जीवन से भी ज़्यादा ज़ोरदार संदेश दे गई। उनका सफ़र त्याग, प्रेम, सहनशीलता और अटूट विश्वास की एक जीती-जागती मिसाल है। उन्होंने जिस सुसमाचार का प्रचार किया, वह सिर्फ़ शब्दों में नहीं, बल्कि उनके जीवन में भी झलकता था।

मुसीबतों के बीच परमेश्वर के बुलावे पर उनकी अडिग निष्ठा आज की पीढ़ी के लिए एक बड़ी चुनौती और प्रेरणा है।

आज, ज़रा सोचिए—आपको किस बात से डर लगता है?

ऐसा हो की जॉन विंसन का जीवन हमें विश्वास में अडिग रहने की चुनौती दे।

Heart Beat

खूबसूरती बनाम पहचान

मैंने अपनी Ph.D. पूरी की है और अभी एक कॉलेज प्रोफेसर के तौर पर काम कर रही हूँ। मैं 32 साल की हूँ और शादी का इंतज़ार कर रही हूँ। लेकिन जब भी लोग मेरी फ़ोटो देखते हैं, तो उनमें से कई तुरंत रिश्ता ठुकरा देते हैं। आजकल ऐसा लगता है कि शिक्षा, चरित्र और अच्छे करियर की कोई अहमियत नहीं रही—सिर्फ़ बाहरी खूबसूरती ही मायने रखती है।

मेरे स्टूडेंट्स अक्सर मुझे अपनी शादियों में बुलाते हैं और कहते हैं, "मैडम, आपको ज़रूर आना है!" हालाँकि मैं उनके लिए खुश होती हूँ, लेकिन कभी-कभी बहुत दुख भी होता है। यहाँ तक कि मेरे माता-पिता भी ऐसी बातें कहते हैं, "बस शादी कर लो और जल्दी घर से निकल जाओ। अपनी छोटी बहन के भविष्य के लिए मुसीबत मत बनो।"

इन सब बातों की वजह से मुझे अपनी ज़िंदगी पर सवाल उठाने पड़ते हैं। कुंवारी रहने का दर्द तो एक तरफ़ है, लेकिन उससे भी ज़्यादा दुख तब होता है जब मैं अपने सपनों को धीरे-धीरे टूटते हुए देखती हूँ। मेरा सपना है कि एक दिन कॉलेज प्रिंसिपल बनूँ और ऐसे शिक्षण संस्थान शुरू करूँ जिनसे कई लोगों की ज़िंदगी पर प्रभाव पड़े। क्या वे सपने कभी सच होंगे? मैं यह सारा दर्द क्यों ढोती रहूँ?

— *रोशनी, ऊटी*

प्रिय रोशनी,

सबसे पहले, अपनी भावनाओं के बारे में ईमानदारी से बताने के लिए धन्यवाद। आप जो दर्द महसूस कर रही हैं, वह सच है। जब जिन लोगों से आप हिम्मत और साथ की उम्मीद करती हैं, वही लोग दिल दुखाने वाली बातें कहते हैं, तो आपको ठुकराया हुआ, अकेला और थका हुआ महसूस हो सकता है।

लेकिन मैं आपको एक ज़रूरी बात बताना चाहता हूँ:

आपकी कीमत किसी फ़ोटो से तय नहीं होती।

आपकी अहमियत किसी शादी के रिश्ते से तय नहीं होती।

आपकी पहचान लोगों की राय में नहीं होती।

संसार भले ही बाहरी रूप-रंग के आधार पर परखे, लेकिन परमेश्वर कभी ऐसा नहीं करते।

अभी ऐसा लगता है कि आपने स्वयं को 'ठुकराए जाने' के नज़रिए से देखना शुरू कर दिया है। जब बहुत से लोग "नहीं" कहते हैं, तो हमें लगने लगता है कि हममें ही कोई कमी है। लेकिन सच यह नहीं है।

आइए, सोचने का नज़रिया बदलें

यह पूछने के बजाय कि "मेरी शादी क्यों नहीं हो रही है?" यह पूछना शुरू करें: "देखिए, परमेश्वर मुझे अब तक कितनी दूर तक ले आए हैं!"

ज़रा सोचिए:

- आपने Ph.D. पूरी की।
- आप कॉलेज प्रोफेसर बनीं।
- आप हर दिन स्टूडेंट्स के जीवन पर असर डाल रही हैं।
- आपके सपने आपसे कहीं बड़े हैं।
- आप शिक्षा के ज़रिए दूसरी महिलाओं की मदद करना चाहती हैं।

यह नाकामी नहीं है। यह एक मकसद है। परमेश्वर आपके बारे में क्या कहते हैं? भजन संहिता 139:14 कहता है: "मैं अद्भुत और अनोखे ढंग से रचा गया हूँ।"

- परमेश्वर ने आपको गलती से नहीं बनाया है।
- आप कोई गलती नहीं हैं।
- आप दूसरों से कम नहीं हैं।
- आप "अविवाहित हैं इसलिए असफल हैं" - ऐसा नहीं है।
- परमेश्वर ने आपको अद्भुत ढंग से बनाया है।

संसार बाहरी सुंदरता पर ध्यान देता है। लेकिन परमेश्वर बहुत गहरी चीज़ों को देखते हैं। 1 पतरस 3:4 हमें याद दिलाता है कि सच्ची सुंदरता एक शांत और सौम्य स्वभाव में होती है—ऐसे गुण जो परमेश्वर की नज़र में बहुत कीमती हैं।

रोशनी, परमेश्वर ने आपको स्वाभाविक रूप से कई अच्छे गुण दिए हैं। परमेश्वर की स्तुति हो।

वह सुंदरता जो शायद आप स्वयं में न देख पाएं

आप सौम्य हैं
इतने दुख सहने के बाद भी, आप अपने माता-पिता से प्रेम करतीं हैं। यह आपके हृदय के विषय में बहुत कुछ बताता है।

आप धैर्यवान हैं
बहुत से लोग दबाव महसूस होने पर जल्दबाजी में फैसले लेते हैं। लेकिन आपने इंतजार करना चुना है।

आप मजबूत हैं
मुश्किल ज़िंदगी के बावजूद आपने पढ़ाई नहीं छोड़ी। आपने हिम्मत नहीं हारा और Ph.D. हासिल की।

आप मुश्किलों का सामना करने वालीं हैं
निराशाओं के बावजूद आप अभी भी सपने देख रहे हैं, उम्मीद कर रहे हैं और आगे बढ़ रहे हैं।

आपकी सोच बड़ी है
आप सिर्फ़ अपने लिए सफल ज़िंदगी नहीं चाहते—आप ऐसी संस्थाएं बनाना चाहते हैं जो दूसरों को सफल होने में मदद करें। यह एक खूबसूरत सपना है।

कुछ व्यावहारिक सुझाव

- सिर्फ़ इसलिए शादी की जल्दबाजी न करें क्योंकि आपको लगता है कि समय निकलता जा रहा है। दबाव में लिया गया फैसला कभी-कभी जीवन भर का पछतावा बन सकता है। परमेश्वर के समय पर भरोसा रखें और धैर्य रखें।
- अपने माता-पिता से ईमानदारी और शांति से बात करें। अगर इससे परिवार का दबाव कम हो सकता है, तो आप सुझाव दे सकते हैं कि पहले आपकी छोटी बहन की शादी हो जाए और फिर आपकी शादी पर ध्यान दिया जाए।
- अगर घर का माहौल भावनात्मक रूप से थका देने वाला हो जाए, और आपके माता-पिता को इसमें कोई दिक्कत न हो, तो किसी सुरक्षित महिला हॉस्टल या पेइंग गेस्ट (PG) में रहने के बारे में सोचें। कभी-कभी बेहतर माहौल आपको साफ-साफ सोचने, भावनात्मक रूप से ठीक होने और अपने भविष्य पर ध्यान केंद्रित करने में मदद कर सकता है।
- अपने जीवनसाथी के लिए सोच-समझकर प्रार्थना करें। प्रार्थना और उपवास के ज़रिए परमेश्वर की इच्छा जानने के लिए समय निकालें। भरोसा रखें कि वे अच्छी तरह जानते हैं कि आपके लिए कौन सबसे अच्छा है और सही समय कब होगा।
- उम्मीद बनाए रखें। निराशा को स्वयं पर हावी न होने दें। विश्वास रखें कि आपकी शादी परमेश्वर की सही योजना और सही समय पर होगी।
- तब तक, एक प्रोफ़ेसर के तौर पर अपना बेस्ट देती रहो। स्टूडेंट्स पर अच्छा असर डालती रहो, अपने करियर में आगे बढ़ती रहो और परमेश्वर ने जो मौके तुम्हें दिए हैं, उनमें बेहतरीन काम करती रहो।
- और सबसे ज़रूरी बात, कॉलेज प्रिंसिपल बनने का अपना सपना कभी मत छोड़ना। एक सपने के पूरा होने में देरी की वजह से उन दूसरे सपनों को पूरा करने की कोशिश कभी मत रोकना जो परमेश्वर ने तुम्हारे हृदय में डाले हैं।

शुभकामनाएं, भविष्य की प्रिंसिपल रोशनी!

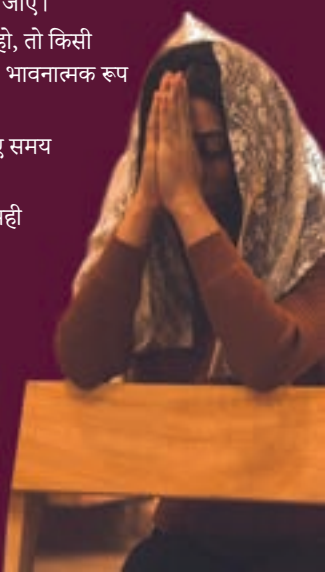

साधारण परिवार... असाधारण सफलता!!!

आज हम एबेनेज़र से मिलेंगे, जो एक आम परिवार की युवा छात्रा हैं। उन्होंने कम उम्र से ही परमेश्वर से मिली बुद्धि का इस्तेमाल उनकी महिमा के लिए करने का फ़ैसला किया। नतीजतन, उन्होंने पढ़ाई में बहुत अच्छा प्रदर्शन किया है और अब मेडिकल करियर बनाने के सपने के साथ NEET परीक्षा की तैयारी कर रही हैं।

हमें अपने परिवार और बचपन के बारे में बताइए।

मैं अपने परिवार के साथ तेनकासी ज़िले के अपने गृहनगर, पावूरचत्रम में रहती हूँ। मैं श्री असीर जयकुमार और श्रीमती जानसी रानी की इकलौती बेटी हूँ। हालाँकि मेरे माता-पिता पारंपरिक मसीही पृष्ठभूमि से थे, लेकिन उस समय यीशु मसीह के साथ उनका कोई व्यक्तिगत रिश्ता नहीं था। फिर भी, उन्होंने बचपन से ही मुझे मसीही मूल्यों के साथ पाला-पोसा। कम उम्र से ही मुझे बाइबल की आयतें पढ़ना और मसीही गीत गाना पसंद था। मैंने कलीसियाओं द्वारा आयोजित बाइबल प्रतियोगिताओं में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया और कई मेडल और सर्टिफ़िकेट जीते। परमेश्वर के अनुग्रह से, मैंने अपनी पूरी पढ़ाई के दौरान लगातार शीर्ष रैंक हासिल की है।

आपने बताया कि आपके माता-पिता मसीही पृष्ठभूमि से थे लेकिन वे सच में यीशु को नहीं जानते थे। क्या आप सिर्फ़ नाम के मसीही थे?

हाँ, आप ऐसा कह सकते हैं। मेरे पिता की नौकरी के कारण, हम परिवार के साथ तिरुपुर में रहते थे। हम वहाँ नियमित रूप से एक अच्छे आध्यात्मिक चर्च में जाते थे। हालाँकि, हममें से किसी ने भी सच्चे उद्धार का अनुभव नहीं किया था। बाद में, मेरी माँ हमारे परिवार की पहली सदस्य थीं जिन्हें उद्धार का भरोसा मिला। उस दिन के बाद से, वह हर दिन मेरे और मेरे पिता के सिर पर हाथ रखकर हमारे लिए प्रार्थना करती थीं। उनकी प्रार्थनाओं के ज़रिए, हम धीरे-धीरे यह समझने लगे कि यीशु असल में कौन हैं।

क्या आपने उसके तुरंत बाद यीशु को अपना लिया?

तुरंत नहीं। कुछ महीनों बाद, मेरे पिता की नौकरी चली गई क्योंकि जिस कंपनी में वह काम करते थे, वहाँ कुछ समस्याएँ आ गई थीं। नतीजतन, हमारे परिवार को अपने गाँव लौटना पड़ा। मेरी माँ बहुत दुखी थीं क्योंकि हमें अपना आध्यात्मिक रूप से मज़बूत चर्च और वह प्रतिष्ठित स्कूल, जहाँ मैं पढ़ रही थी, दोनों छोड़ने पड़े थे। लेकिन घर लौटने के बाद, परमेश्वर ने हमें एक और अच्छा चर्च दिया। लेकिन मेरी पढ़ाई को लेकर चीज़ें वैसी नहीं हुईं जैसी हमने उम्मीद की थी। मुझे अपने गाँव के एक लोकल स्कूल में दाखिला लेना पड़ा, जिससे मेरी माँ निराश हुईं। हालाँकि, परमेश्वर ने उनसे कहा, "मैं तुम्हारी बेटी को ऐसी जगह से आगे बढ़ाऊँगा जहाँ कुछ भी संभव नहीं लगता।" इसे परमेश्वर की मर्ज़ी मानकर, मेरे माता-पिता ने मुझे उस स्कूल में दाखिला दिलाया। इसी दौरान मेरे पिता ने भी यीशु को अपना व्यक्तिगत उद्धारकर्ता मान लिया। उसके बाद, उन्होंने हमारे शहर में दिहाड़ी मज़दूर के तौर पर काम करना शुरू किया।

यीशु को मानने के बाद आपके परिवार की स्थिति कैसी थी?

हमारे परिवार में शांति तो थी, लेकिन आर्थिक रूप से हालात बहुत मुश्किल थे।

मेरे माता-पिता को मेरी स्कूल की फ़ीस भरने में बहुत संघर्ष करना पड़ता था। एक बार, फ़ीस न भर पाने के कारण स्कूल में मुझे बहुत डांट पड़ी। मैं दुखी मन से घर लौटी और प्रार्थना में परमेश्वर के सामने रोई।

प्रभु ने चमत्कारिक रूप से फ़ीस के लिए ज़रूरी पैसे का इंतज़ाम कर दिया। उस अनुभव ने मेरे विश्वास को बहुत मज़बूत किया और मुझे परमेश्वर पर और भी गहरा भरोसा करना सिखाया।

हमें अपनी आध्यात्मिक यात्रा के बारे में बताएं।

लॉकडाउन के दौरान, मैंने "कम लेट्स प्रे" (Come Let's Pray) प्रोग्राम देखना शुरू किया और देश के लिए प्रार्थना करने का महत्व समझा। मैंने 21-दिन के डैनियल उपवास-प्रार्थना में हिस्सा लिया और उपवास व प्रार्थना के ज़रिए परमेश्वर की खोज में समय बिताया। उस दौरान, मैं और मेरे मित्र सुसमाचार के काम में भी शामिल थे, और लोगों को पर्चे (ट्रैक्ट्स) बांटकर परमेश्वर का संदेश पहुंचाते थे।

हमें अपनी पढ़ाई-लिखाई के सफ़र के बारे में बताएं।

मुझे हमेशा से पढ़ना पसंद रहा है और मैंने पढ़ाई में कड़ी मेहनत की है। जब मैं आठवीं कक्षा में थी, तो मैंने ज़िला स्तर पर

निबंध-लेखन प्रतियोगिता में पहला स्थान हासिल किया। कई सालों तक मुझे सेहत से जुड़ी समस्याओं का सामना करना पड़ा और नियमित रूप से दवा लेनी पड़ी। नालुमावडी में हुई एक प्रार्थना सभा के दौरान, मैंने परमेश्वर के चंगाई देने वाले स्पर्श को महसूस किया और पूरी तरह से छुटकारा पाया। दसवीं कक्षा में पढ़ते समय, मुझे हीमोग्लोबिन की कमी की समस्या हो गई। सीढ़ियां चढ़ने-उतरने पर भी मेरी सांस फूलने लगती थी, और मुझे अक्सर बुखार रहता था। उसी मुश्किल दौर में, मैंने 2024 में प्रेयर माउंटेन पर हुई 'अचीवर्स मीटिंग' में हिस्सा लिया। वहां, परमेश्वर ने मुझसे व्यक्तिगत रूप से बात की और मेरे डर को दूर किया। तब से, मैं रोज़ यह घोषणा करते हुए प्रार्थना करती थी:

"मैं मसीह के ज़रिए जो मुझे सामर्थ देता है सब कुछ कर सकती हूं।"

अपनी तमिल और अंग्रेज़ी बोर्ड परीक्षाओं के दौरान, मुझे तेज़ बुखार था। मुझे गोलियां लेनी पड़ती थीं और सीधे परीक्षा हॉल में जाना पड़ता था। फिर भी, उस स्थिति में भी परमेश्वर ने मुझे बल दिया और दसवीं कक्षा में 496 अंक हासिल करने में मदद की, जिससे मैंने ज़िला स्तर पर दूसरा स्थान प्राप्त किया। परमेश्वर की कृपा से, बाद में मैंने हायर सेकेंडरी स्कूल में मैथ्स-बायोलॉजी ग्रुप चुना। 12वीं कक्षा की बोर्ड परीक्षाओं के दौरान, मुझे लगभग दो महीनों तक लगातार खांसी की समस्या रही और रात में सोने में भी बहुत परेशानी हुई। लेकिन यीशु ने मुझे उससे भी छुटकारा दिलाया। नतीजतन, परमेश्वर के अनुग्रह से, मैंने 2026 में 12वीं कक्षा की बोर्ड परीक्षाओं में 564 अंक हासिल किए। अब मैं NEET परीक्षा की तैयारी कर रही हूँ और अपनी यात्रा के अगले पड़ाव के लिए परमेश्वर पर भरोसा कर रही हूँ।

आप युवाओं से क्या कहना चाहेंगे?

जब हम परमेश्वर की इच्छा को जान लेते हैं और उसे चुनने का फैसला करते हैं... उस रास्ते पर चलें; प्रभु हमारे साथ हैं और जीवन के हर क्षेत्र में सफलता देते हैं। समस्याओं, निराशाओं या बीमारी को स्वयं को हतोत्साहित न करने दें। जब आप पूरे जोश के साथ परमेश्वर के लिए खड़े होते हैं, तो सबसे मुश्किल पलों में वे भी पूरे जोश के साथ आपके साथ खड़े होते हैं।

स्वयं को पूरे हृदय से परमेश्वर को समर्पित करें और उनके राज्य के लिए पूरे उत्साह के साथ आगे बढ़ें!

इसे पढ़ने वाले हर छात्र को मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ—परमेश्वर इस शैक्षणिक वर्ष में आपको ज़िला, राज्य और यहाँ तक कि राष्ट्रीय स्तर पर सफलता पाने में मदद करें।

प्रिय मित्रों, जब आप परमेश्वर द्वारा दी गई बुद्धि और प्रतिभा का उपयोग उनकी महिमा के लिए करने का निर्णय लेते हैं, तो वे आपको भी उसी तरह ऊँचा उठा सकते हैं जैसे उन्होंने सिस्टर एबेनेज़र के लिए किया था।

आपकी पृष्ठभूमि आपके भविष्य को तय नहीं करती।

आपका संघर्ष आपकी नियति को परिभाषित नहीं करता।

जब परमेश्वर आपकी यात्रा के केंद्र में होते हैं, तो एक साधारण जीवन भी एक असाधारण गवाही बन सकता है।

इसलिए बड़े सपने देखें, परमेश्वर पर भरोसा रखें, कड़ी मेहनत करें और उन्हें अपनी सफलता की कहानी लिखने दें!

समाचार

दुनिया भर में 1.2 अरब लोग मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं से जूझ रहे हैं

लैंसेट अध्ययन से पता चला है कि 1990 के बाद से मामलों की संख्या दोगुनी हो गई है

जाने-माने ब्रिटिश मेडिकल जर्नल 'द लैंसेट' की हालिया रिपोर्ट में दुनिया भर में मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं में चिंताजनक बढ़ोतरी की बात कही गई है। अध्ययन के मुताबिक, अभी दुनिया भर में लगभग 1.2 अरब लोग किसी न किसी तरह की मानसिक स्वास्थ्य समस्या से जूझ रहे हैं—यह संख्या 1990 के बाद से दोगुनी हो गई है।

अध्ययन से पता चलता है कि मानसिक स्वास्थ्य समस्याएं आम तौर पर महिलाओं में ज़्यादा देखी जाती हैं। हालांकि, ऑटिज़्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर (ASD), अटेंशन-डेफिसिट/हाइपरएक्टिविटी डिसऑर्डर (ADHD) और कुछ पर्सनैलिटी डिसऑर्डर जैसी समस्याएं पुरुषों में ज़्यादा देखी जाती हैं।

स्टडी में यह भी पता चला है कि पिछले तीन दशकों में कुछ खास मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं में भारी बढ़ोतरी हुई है। 1990 के बाद से एंग्जायटी डिसऑर्डर (चिंता संबंधी विकार) में 158% और डिप्रेशन (अवसाद) में 131% की बढ़ोतरी हुई है। आज अनुमान है कि दुनिया भर में हर सात में से एक व्यक्ति मानसिक स्वास्थ्य समस्या से प्रभावित है।

रिसर्चर्स ने पाया कि कोविड-19 महामारी से पहले ही एंग्जायटी और डिप्रेशन बढ़ रहे थे। हालांकि, महामारी और उसके बाद के हालात ने इस ट्रेंड को काफी तेज़ी दी, और मानसिक स्वास्थ्य की स्थिति महामारी से पहले के स्तर पर वापस नहीं आई है।

खास तौर पर चिंता की बात यह है कि 2023 में मानसिक स्वास्थ्य से जुड़ी चुनौतियां अपने सबसे ऊंचे स्तर पर पहुंच गईं, और 15 से 19 साल के किशोर सबसे ज़्यादा प्रभावित समूहों में शामिल थे।

रिपोर्ट में इस बात पर ज़ोर दिया गया है कि बढ़ते संकट से निपटने के लिए सिर्फ़ मेडिकल सेवाओं का विस्तार करना काफ़ी नहीं होगा। रिसर्चर्स एक ऐसे व्यापक तरीके की सलाह देते हैं जिसमें ये चीज़ें शामिल हों:

- प्रोफेशनल काउंसलिंग और थेरेपी
- ज़रूरत पड़ने पर सही दवा
- हेल्दी न्यूट्रिशन (पौष्टिक आहार)
- नियमित शारीरिक गतिविधि
- पर्याप्त नींद
- अर्थपूर्ण सामाजिक संबंध और कम्युनिटी एंगेजमेंट (समुदाय से जुड़ाव)

मानसिक सेहत को बेहतर बनाने के लिए सही क्लिनिकल देखभाल के साथ-साथ जीवनशैली से जुड़ी ये बातें भी ज़रूरी मानी जाती हैं।

अध्ययन के मुख्य लेखक डेमियन सैंटोमौरो ने नतीजों पर टिप्पणी करते हुए कहा कि दुनिया भर में मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं में हुई बढ़ोतरी के पैमाने को देखकर वे सचमुच हैरान थे। इस व्यापक रिपोर्ट को प्रकाशित करने से पहले रिसर्च टीम ने मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं की 12 प्रमुख श्रेणियों का विश्लेषण किया। - ***हिंदू तमिल थिसाई, 23 मई, 2026***

Youth Revival Meetings

उत्तर भारत में युवाओं के लिए 'आध्यात्मिक जागृति'(रिवाइवल) सभाएँ

परमेश्वर के अनुग्रह से, अप्रैल के महीने में झारखंड राज्य में चार जगहों पर और महाराष्ट्र के पुणे में, विशेष तौर पर युवाओं के लिए 'रिवाइवल' सभाएँ आयोजित की गईं। इन सभाओं में लगभग 1,825 युवाओं ने पूरे जोश के साथ हिस्सा लिया, आध्यात्मिक जागृति का दर्शन पाया और अपने-अपने कलीसियाओं में सेवा करने के लिए स्वयं को समर्पित किया।

कई लोगों के लिए यह अनुभव उनकी ज़िंदगी बदलने वाला था। परमेश्वर ने पहली बार कई युवाओं को अभिषेक दिया और उनमें उत्साह भरा, ताकि वे एक ऐसी पीढ़ी के तौर पर खड़े हो सकें जो आध्यात्मिक जागृति के लिए पूरे मन से प्रार्थना करे और देश के लिए मध्यस्थता करे। ये सभाएँ एक ऐसा मंच बनीं जिसके ज़रिए प्रभु ने लोगों के जीवन को गहराई से छुआ और उनके हृदयों में अपने राज्य के लिए जुनून जगाया।

इन सभाओं के दौरान प्रभु ने अपने सेवकों का भी ज़बरदस्त इस्तेमाल किया; उन्होंने वचन के प्रचार, प्रार्थना और आध्यात्मिक आशीषों के ज़रिए सेवा की। नतीजतन, कई युवा परमेश्वर के बुलाहट के प्रति नए संकल्प के साथ और मसीह के लिए अपने चर्च, समुदाय और देश पर असर डालने की लगन के साथ लौटे।

"आध्यात्मिक रूप से जागृत पीढ़ी देश में बदलाव लाने वाली ताकत बन सकती है।"